DELHIN/2007/20081 Date of Publication: 13/01/2023 DL(N)/202/2022-24

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–16 अंक–08 जनवरी 2023 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

सत्संग भवन – सी॰एस॰/ओ॰सी॰एफ॰ नं॰ 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85
मो॰ : 9810344596, 011–27574151
ई–मेलः atmagyanp@gmail.com
वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.com

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

इस अंक में प्रकाशितः–

1. निराकार ब्रह्म दिव्य दृष्टि से साकार होता है।
2. अपने अन्दर समर्पण की सुवास पैदा करें परमात्मा स्वयं प्रकट हो जायेंगे।।
3. ज्ञान एवं भक्ति एक दूसरे के पूरक हैं।
4. शब्द ही सृष्टि की उत्पत्ति और सभी जीवों के जीवन का आधार है।
5. योगी प्रकृति को किस प्रकार वश में करता है।
6. अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर एवं सत्संग का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग–1)

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः– चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.com है

सम्पादकीय

रुहानी गुरू आनन्द के दाता, शाश्वत् दण्डवत् प्रणाम!!!

निराकार ब्रह्म दिव्य दृष्टि से साकार होता है।

परमात्मा का साधन भजन न करने वाले अज्ञानी मनुष्य कहते हैं कि निराकार ब्रह्म साकार हो ही नहीं सकता है। ऐसा कहकर वे मानव के अन्दर अविश्वास और निराशा पैदा करते हैं। जबकि वेद तथा तत्वदर्शी सन्त अपने अनुभव के आधार पर बताते हैं कि लगनशील साधक परमात्मा के प्रत्यक्ष दर्शन कर लेता है। यह यजुर्वेद के मन्त्र द्वारा स्पष्ट है।

वेनस्तत् पश्यन्तिहिंत गुहा सद् यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्।
तस्मिन्निदं सं च विचेति सर्वम् सः औत प्रौतश्च विभु प्रजासु।।

अर्थात् इच्छुक एवं लगनशील साधक उस ब्रह्म को देख लेता है जो गुहा (गुप्त) रूप में स्थित है जिसमें सारा विश्व उसी प्रकार निवास करता है जिस प्रकार एक पेड़ पर बने घोंसलों में अनेक पक्षी निवास करते हैं। जिस ब्रह्म में प्रलयकाल में यह सारा जगत् समाविष्ट हो जाता है और उत्पत्ति काल में बाहर निकल आता है। वह व्यापक ब्रह्म सभी प्रजाओं में ओत–प्रोत है अर्थात् सभी जीवों में व्याप्त है। निराकार ब्रह्म को इन भौतिक आँखों से नहीं देखा जा सकता है बल्कि दिव्य दृष्टि से देखा जाता है इसीलिए कहा जाता है कि "मन की आँखें खोल रे बाबा मन की आँखें खोल" जब तक सकाम कर्मों के प्रभाव से मानव का मन चंचल रहता है तथा चित्त की वृत्तियाँ भी चलायमान रहती हैं तब तक उसे ब्रह्म प्रकाश दिखायी नहीं देता है। जैसे तालाब के हिलते हुए पानी में नीचे रहने वाले जीव ऊपर की वस्तुओं को नहीं देख पाते हैं और ऊपर वाले पानी के नीचे की वस्तुओं को नहीं देख पाते हैं परन्तु हिलते हुए पानी के शान्त हो जाने पर मछली आदि जीव सूर्य की रोशनी को भी देख लेती है तथा ऊपर वाले जीव पानी में रहने वाली मछली आदि जीव तथा पानी की तली में पड़ी हुई वस्तुओं को भी देख लेते हैं। जब मानव तत्वदर्शी सन्त से ज्ञान प्राप्त कर साधना के द्वारा अचल ब्रह्म से जुड़ जाता है तो उसके मन की चंचलता रूकने लगती है तथा उसके चित्त वृत्तियों का निरोध होने लगता है तब ब्रह्म सूर्य का प्रकाश साधक के जीवन में पहुँचकर उसे निर्मल व प्रकाशित कर देता है फिर साधक निराकार ब्रह्मसूर्य को अपने अन्दर साकार रूप में देखता है। साधन करने से उसका जीवन पारदर्शी बन जाता है फिर साधक निराकार ब्रह्म को भी देखता है तथा अपने आपको भी देखता है। वह अपने जीवन में सूक्ष्म तत्वों को भी पृथक–पृथक अनुभव करता है तथा ब्रह्म की अनन्त दिव्य शक्तियों को अपने जीवन में उपयोगी बना लेता है। परमात्मा का निस्वार्थ प्रेम, दया, अमृत आदि साधक के जीवन को उज्जवल बना देते हैं। उसका आत्म बल इतना बढ़ जाता है कि वह काल का मुकाबला करने में भी सक्षम हो जाता है। वह स्वतन्त्र जीवन जीता है अतः अज्ञानियों का यह कहना कि निराकार का साकार दर्शन नहीं होता है आत्मा–परमात्मा सबके अन्दर है जो चीज होती है उसका ज्ञान भी होता है जितना बड़ा रोग होता है परमात्मा ने उतनी बड़ी औषधि भी बनायी है।

अपने अन्दर समर्पण की सुवास पैदा करें परमात्मा स्वयं प्रकट हो जायेंगे

यदि मानव समर्पणशील हो जाये तो उसे अपने अन्दर ही परमात्मा के दर्शन शीघ्र हो सकते हैं। समर्पण के लिए योग को अपनाना अतिआवश्यक है क्योंकि अपने आप को ऊर्जावान बनाने के लिए योग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। योग का अर्थ है जुड़ना। अपने आप से जुड़ना तथा परमात्मा शक्ति से जुड़ना। यदि हम अपने जीवन में पूर्ण शान्ति चाहते हैं तो हमें योग को अपनाना ही पड़ेगा। योग का उद्देश्य चित्त के बिखराव को रोकना है चित्त के समीकरण का नाम योग है परन्तु अनैतिक कार्यों को त्यागे बिना योग में नहीं जिया जा सकता है। योग कोई धर्म नहीं होता है बल्कि सभी धर्मों का मार्ग योग है। योग वास्तव में जीवन की दृष्टि है और समर्पण भक्त से भगवान होने का मार्ग है। परमात्मा के शरणागत हो जाना ही समर्पण है। अपने अहंकार को मिटाकर परमात्मा के आश्रित होना ही समर्पण है जब हम अपने जीवन नाव की पतवार परमात्मा के हाथों में सौंप देंगे तो हमारे जीवन का कल्याण होना निश्चित है गीता का यह उपदेश इसी का परिचायक है। **"सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज"।** समर्पण की शुरूआत श्रद्धा से होती है। यह श्रद्धा जब पूर्ण निष्ठा में बदल जाती है तब साध्य से मिलना बड़ा सरल हो जाता है। श्रद्धा एक ऐसा मार्ग है जो मानव को मंजिल तक पहुँचा ही देता है। बिना श्रद्धा के व्यक्ति काली पुतलियों से शून्य आँखों की तरह है। कोई भी साध्य श्रद्धा से ही सधता है। परमात्मा का निवास कहीं आसमान में नहीं बल्कि हमारे हृदय में ही है और श्रद्धा हृदय की अभिव्यक्ति है। हृदय की प्यास है। हृदय का समर्पण है और हृदय का सुगन्धित फूल है। जिस प्रकार से सुगन्धित फूल पर भंवरा आकर मंडराने लगता है उसी प्रकार मानव के अन्दर समर्पण की सुवास (सुगन्ध) पैदा हो जाये तो उस सुवास पर परमात्मा स्वयं प्रकट हो जाते हैं। श्रद्धा वह नौका है जो हृदय के सागर में चलती है। श्रद्धा ही शिष्यत्व की सच्ची पहचान है। शिष्य में यदि गुरू के प्रति पूर्ण श्रद्धा हो तो गुरू चाहे सैंकड़ो मील दूर भी क्यों न हो उसे आना ही पड़ता है। श्रद्धा तो भीतर की तरंग है। जिसको गुरू के प्रति श्रद्धा हो गयी तो उसके लिए गुरू से बढ़कर अन्य तीर्थ नहीं है। जब हमारी सारी भावना और स्मृति परमात्मा से जुड़ जाती है तो हमारा अहम् अर्थात् "मैं" मिटने लगता है और "तू" प्रकट होता चला जाता है हमारी भाव दशा ही बदल जाती है और हम कहने लगते हैं किः–

तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूँ।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूँ तित् तू।।

कबीर दास जी इस विषय को इस प्रकार प्रकट करते हैंः–

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल।।

परन्तु खेद का विषय है कि हमारी श्रद्धा न तो पूर्ण निष्ठा में बदल पाती है और न ही हम अपने देहभाव को मिटा पाते हैं और अपने अहं भाव को भी परमात्मा को समर्पित नहीं कर पाते हैं। नतीजा यह निकलता है कि अहं समर्पण के बिना हमारे द्वारा परमात्मा को अर्पित किये गये पुष्प मेवा मिष्ठान आदि सभी व्यर्थ हो जाते हैं। क्या हम अपने अन्दर या अपने चारों ओर

परमात्मा को देख पा रहे हैं? हमें अपने चारों ओर अपना स्वार्थ ही दिखायी दे रहा है। यदि हम अपने अन्दर और अपने चारों तरफ परमात्मा को ही देखें तो हमारे अन्दर पाप की रत्ती भर भी धूल दिखायी नहीं देगी। जब हमारा हर कर्म परमात्मा को समर्पित हो जायेगा तो फिर हम परमात्मा को ढूंढेंगे नहीं बल्कि हमारे प्रत्येक कर्म में परमात्मा ही व्यक्त होने लगेंगे। परमात्मा हमारे दिल की धड़कन बन जायेंगे और हमारे श्वाँस–प्रश्वाँस में उसी की आवाज़ सुनायी देने लगेगी तब रैदास भक्त की वह उक्ति चरितार्थ हो जायेगी "मन चंगा तो कठोती में गंगा" परमात्मा को न तो हमारा नैवैद्य चाहिए न ही फल–फूल तथा मेवा मिष्ठान चाहिए ये सब तो वे हमें ही दे रहे हैं उन्हें तो केवल हमारी श्रद्धा एवं समर्पण ही चाहिए कहा गया है कि "अन्न–धन वस्त्र आभूषण कुछ न मुझको चाहिए, आप हो जाओं मेरे बस यही मेरा सत्कार है" हमारी सुरति एवं स्मृति परमात्मा के साथ जुड़ी रहे यही उनके प्रति हमारी पूर्ण श्रद्धा एवं समर्पण है। इसलिए हमारा प्रत्येक कर्म परमात्मा को समर्पित होने वाला अर्ध्य होना चाहिए। हमें प्रार्थना में परमात्मा से कुछ नहीं माँगना चाहिए क्योंकि उन्हें प्रत्येक जीव का ख्याल है हमें तो केवल अपने मन को शान्त करने के लिए अपनी चेतना को ब्रह्म चेतना के साथ जोड़ने का प्रयास ही करना चाहिए। सच्चे मन से आधा घंटा की गयी प्रार्थना एवं ध्यान भी जीवन में अपनाया गया सर्वोत्तम योग है। यदि परमात्मा से मांगना ही है तो केवल उसी का निस्वार्थ प्रेम और परमार्थ की भावना हमारे अन्दर विकसित हो यही मांग होनी चाहिए। मांगने के बजाय उसके द्वारा दी गयी मनुष्य योनि के प्रति कृतज्ञता को प्रकट करें और आनन्द को प्राप्त करें। हमारे पुरखे क्या थे? और हम क्या बनेंगे इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए केवल वर्तमान को ही आनन्दमय बनाना चाहिए।

सोच व्यर्थ है बीते अतीत का, व्यर्थ है आगे का चिन्तन।
जीवन तो बस वर्तमान है, श्रेष्ठ इसी का अभिनन्दन।।

अतः हम सभी का परम कर्तव्य है कि हम वर्तमान में अपने जीवन को परमात्मा को समर्पित जीवन को आनन्दमय बनाये

भजन

सच्चे रूहानी गुरू की यारी नर संसारी क्या जाने।
सत्संग कभी न आया, झूठ कपट में समय बिताया।
वेद पुराण को पढ़–पढ़ करके बन गये बड़े अहंकारी।। नर संसारी...।
मक्खी मच्छर बड़े दुखकारी, मधु मक्खी एक पर उपकारी।
शहद बनाकर सबको पिलाकर, मन में नहीं विचारी।। नर संसारी...
स्वाति बूँद अम्बर से आयी, सीप ने पीकर मोती बनायी।
हंसा मोती चुग–चुग करके, लम्बी भरे उड़ारी।। नर संसारी...
सुन्न शिखर की कठिन चढ़ाई, अमृत बूंद साधन से पाई।
तत्व ज्ञान का अनुभव करके, बन गये पर उपकारी।। नर संसारी...
सत्संग की महिमा भारी, सन्त जगत में बड़े उपकारी।
चेतन ज्ञान का अमृत पीकर, बन गये मोक्ष अधिकारी।। नर संसारी...

ज्ञान एवं भक्ति एक दूसरे के पूरक हैं।

वैदिक काल में केवल एक ही ब्रह्म की उपासना का वर्णन आता है उनके अनुसार ब्रह्म अव्यक्त है वह मन एवं इन्द्रियों से परे है तथा अति सूक्ष्म एवं सुख स्वरूप है अतः कहा जाता है कि "नहि ज्ञानात परम सुखम" इसी प्रकार से भक्ति को भी सुख की खान बताया गया है तुलसी दास जी लिखते हैं कि "भक्ति स्वतन्त्र सकल सुख खानि" यह ब्रह्म सत्–चित् एवं आनन्द स्वरूप है। परमात्मा के निर्गुण एवं निराकार स्वरूप को जानकर उसे प्राप्त करने का मार्ग ज्ञान मार्ग है तथा परमात्मा के सगुण एवं साकार स्वरूप को जानकर उसे प्राप्त करने का मार्ग भक्ति मार्ग है दोनों का उद्देश्य ही परमात्मा को प्राप्त करना है भक्ति मार्ग पर चलने वाले मानते हैं कि अव्यक्त ब्रह्म अर्थात् निराकार निर्गुण में मन का स्थिर होना कठिन है वे ज्ञान मार्ग को तलवार की धार के समान बताते हैं। तुलसी दास जी लिखते हैं किः– "ज्ञान पंथ कृपाण की धारा" भक्ति मार्ग के अन्य सन्त भी लिखते हैंः–

ज्ञान मार्ग अति कठिन है जैसे पेड़ खजूर।
ऊपर चढ़े तो रस पीवे, पर गिरे तो चकनाचूर।।

अर्थात् ज्ञान मार्ग पर कोई विरला ही साधक चल पाता है भक्ति का मार्ग सरल एवं सुगम है उनके अनुसार भक्ति मार्ग का अनुसरण करना अधिक प्रेरणादायक लगता है तुलसी दास जी ज्ञान एवं भक्ति में भेद नहीं मानते हैं वे दोनों को सांसारिक दुखों से छुटकारा दिलाने वाले बताते हैं "ज्ञानहि भक्तिहि नहि कछु भेदा, उभय हरहि भव संभव खेदा।" वैसे तो परमात्मा सर्वव्यापी है उसे सगुण एवं निर्गुण मानना हमारी श्रद्धा एवं विश्वास पर निर्भर करता है फिर भी भक्ति मार्गी कहते हैं कि अव्यक्त में भक्ति नहीं होती है बल्कि व्यक्त में ही भक्ति पनपती है। अन्त में भक्ति भी धीरे–धीरे ज्ञान पर पहुँच कर ही विश्राम पाती है। गीता में कहा गया है कि जो परमात्मा को अनन्य भाव से जपता है वह सगुण को भी निर्गुण में जान लेता है क्योंकि सगुण और निर्गुण दोनों ही ब्रह्म स्वरूप हैं "अगुण सगुण दुई ब्रह्म स्वरूपा" अतः सगुण से चलकर विश्राम निर्गुण में ही करो सगुण भी निर्गुण का पूरक है। वास्तव में साधक के मन में श्रद्धा–विश्वास तथा निस्वार्थ प्रेम हो तो निराकार साकार में कुछ भेद नहीं रहता है। फिर भी निवृत्ति मार्ग पर चलने वाले ज्ञान मार्ग को अपनाते हैं तथा प्रवृत्ति मार्ग के साधक भक्ति मार्ग को अपनाते हैं। साधारण व्यक्ति तो प्रवृत्ति एवं निवृत्ति को नदी के दो किनारे मानते हैं जो कभी एक–दूसरे से नहीं मिलते हैं परन्तु भक्ति का मार्ग नदी पर बने पुल का कार्य करता है जिससे दोनों किनारे मिल जाते हैं। ज्ञान का मार्ग वैराग्य को स्वीकार करता है जबकि भक्ति मार्ग कमल के पत्ते की तरह संसार में

रहते हुए संसार से उपरत रहने की सलाह देता है। ब्रह्म को अव्यक्त रूप में जान लेना ज्ञान है तथा उसी को व्यक्त रूप में देखना भक्ति है ज्ञान उसे असीम मानता है जबकि भक्ति उसे समीप मानकर उससे प्रेम करती है फिर भी ज्ञान के कारण न तो वह ब्रह्म बड़ा है और न ही भक्ति के कारण समीप होने से वह छोटा है बल्कि वह तो एक रूप है। ज्ञान मार्ग पर चलने वाले साधक को माया अन्तिम समय तक परेशान करती रहती है। उसका सूक्ष्म रूप साधक को अन्तिम समय तक नीचे गिराने का कार्य करता है इसलिए साधक कहता है कि :–

मोटी माया साधक त्यागे झीनी त्यागी न जाय।
सूक्ष्म माया अहं मति मुक्त हुए को खाय।।

भक्ति पर माया का प्रभाव कम होता है क्योंकि वे दोनों स्त्री रूप हैं अतः स्त्री नारी के रूप पर मोहित नहीं होती है। ज्ञान पुरूष रूप है। माया उसके रूप पर ही मोहित होती है। अतः तुलसीदास जी लिखते हैं किः– **मोह न नारि नारि के रूपा, पन्नगारि यह रीति अनूपा।।** जब साधक परमात्मा के गुणों को ध्यान में रखते हुए उसके गुणों की ओर आकर्षित होता है तो उसके अन्दर भक्ति जन्म लेती है और जैसे–जैसे वह उन गुणों का गुणगान करता है तो उसके अन्दर भक्ति पनपती है। ज्ञान की प्राप्ति गुरू के माध्यम से होती है। ज्ञान से भक्ति की शुरूआत होती है। जैसे सभी नदियों का अन्त सागर में विलीन होना है वैसे ही ज्ञान एवं भक्ति दोनों ही परमात्मा में विलीन हो जाते हैं। ज्ञान के बिना भक्ति एवं भक्ति बिना ज्ञान अपने उच्च स्तर पर नहीं पहुंच पाते हैं अतः ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ज्ञान मार्ग ऊँचे शिखर पर चढ़ने के समान तथा भक्ति मार्ग गंगा में डुबकी लगाने के समान है।

भजन

गुरू बिन ज्ञान, ज्ञान बिन भक्ति नहीं किसी ने पाई।
बिन भक्ति के भव को तरे ना, करो लाख चतुराई।।
बिन सत्संग विवेक नहीं, और बिना विवेक वैराग्य नहीं।
बिन सुमरन साधन के बिना, मिटे मन के काले दाग नहीं।
करे जगत से राग नहीं तो जीवन हो सुखदाई।। गुरू बिन....
कर्म करे बिन भाग्य नहीं, और भाग्य बिना नार पावे ना।
जैसा बोवे वैसा ही काटे, और को दोष लगावे न।
भक्ति प्रभु की पावे ना, जो असली नेक कमाई।। गुरू बिन....
साधक बनकर साधन करले, तेरा गुरू सहारा हो जागा।
जीवन है अनमोल तेरा, वरना इसे विरथा खो जागा।
जो गुरू के अर्पण हो जागा, दिन–दिन हो कला सवाई।। गुरू बिन....

शब्द ही सृष्टि की उत्पत्ति और सभी जीवों के जीवन का आधार है।

इस सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति शब्द से ही हुई है ऐसा सभी मनीषी सन्त मानते हैं। शब्द ही सृष्टि के समस्त शास्त्रों एवं सभी धर्मों का सार है इसीलिए कबीर दास जी लिखते हैं कि:–

साधो सबद साधना कीजे।
जेहि सबद से प्रकट भये सब, सोई सबद गहि लीजे।

गुरू नानक देव शब्द की महानता को इस प्रकार प्रकट करते है–

सबद ही धरती सबद ही आकाश, सबद हि सबद भयो प्रकाश।
सकल सृष्टि सबद के पाछे, नानक सबद घटा घट आछे।।

अन्य सन्त लिखते हैं कि उस शब्द को जपते–जपते मुनि जन व पंडित थक गये और वेद भी उस शब्द का पार नहीं पा सके उनके अनुसार–

एक शब्द मेरे गुरूदेव का, ताका अनन्त विचार।
थाके मुनि जन पंडित, वेद न पावे पार।।

ईसाईयों के धर्मग्रन्थ बाईबिल में ईसामसीह कहते हैं कि सृष्टि में सबसे पहले शब्द ही था। शब्द के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था उनके अनुसार "इन दी बिगनिंग देयर वाज वर्ड" "ओनली दि वर्ड एग्जिस्टेड एण्ड नथिंग एल्स" इस प्रकार से सृष्टि में दिखायी देने वाली समस्त ऊर्जाओं का स्रोत शब्द ही है। अनन्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त चेतना का सार भी शब्द ही है क्योंकि ब्रह्माण्ड का संक्षिप्त रूप एवं विस्तार शब्द से ही सम्पादित हुआ है। महर्षियों एवं सन्तों द्वारा बतायी गयी साधना हमें उस शब्द की ओर ले जाती है जो हम सबसे पहले था। जिसने इस शब्द को जान लिया उससे समग्र ज्ञान को आत्मसात् कर लिया। इसलिए साधु वही है जिसने सार शब्द को ग्रहण कर लिया है:–

साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप स्वभाव।
सार सार को गहि रहे थोथा देय उड़ाय।।

वास्तव में शब्द का अर्थ वह नहीं है जो हम वाणी से बोलते हैं शब्द का सम्बन्ध हिन्दी तथा अंग्रेजी अक्षरों से भी नहीं है। एक शब्द तो वह है जिसका उच्चारण मनुष्य करता है और एक शब्द वह है जिससे मनुष्य स्वयं उच्चारित हुआ है शब्द और सबद में बहुत अन्तर है। सन्त कबीर कहते हैं–

शब्द सबद बहु अन्तरा, सार सबद चित देय।
जो सबदे साहिब मिले, सोई सबद गहि लेय।।

इसलिए हमें शब्द से बहुत ऊँचा उठना होगा और उस शब्द को ग्रहण करना होगा जिससे साहिब अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति होती है। वह सबद हमारी चेतना के अन्तस्थल में केन्द्रित है इसलिए उसे बाहर नहीं सुना जा सकता है। उस शब्द के सुमरन से परमात्मा की ज्योति का दर्शन होता है उस ज्योति के दर्शन मात्र से यम के फन्दे भी कट जाते हैं परन्तु उस ज्योति को वे ही देख सकते हैं जिनकी भीतरी आँख खुली हो इसीलिए कहा गया है कि–

घट घट दीपक है जले, पर देख न पावे अन्ध।
लखत–लखत यदि लखपरे, तो कट जायें यम के फन्द।।

मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक शब्दों की ही यात्रा करता है उसी के शब्द कभी अहंकार

को प्रकट करते हैं और कभी क्रोध को। किसी ने प्रशंसा के शब्द कह दिये तो आप मुस्कुरा उठे और किसी ने बुरे शब्द कह दिये तो आप अपना अपमान महसूस करने लगे अतः शब्दों के माया जाल में नहीं फंसना चाहिए क्योंकि शब्दों के द्वारा की गयी प्रशंसा या अपमान मात्र छलावा है। कबीर दास जी सबद को अमूल्य बताते हैं।

शब्द बराबर धन नहि, जो कोई जाने बोल।
हीरा तो दामों बिके, सबदहि मोल न तोल।।

शब्द की शक्ति ही सभी शक्तियों में श्रेष्ठ होती है क्योंकि सभी प्रकार की शक्तियों का स्रोत शब्द ही है उस शब्द के सुनने में साधक को बाहर के दरवाजे बन्द करके अन्दर के पट खोलने पड़ते हैं और मुख से कोई उच्चारण नहीं करना पड़ता है कहा गया हैः–

सुमरन सुरत लगाई के मुख से कछु न बोल।
बाहर के पट देईके, अन्तर के पट खोल।।

जब साधक का चित्त साधना करते करते पूर्णतया शान्त हो जाता है तो हमारा स्वयं का अस्तित्व ही हमारे अन्दर ध्वनित होने लगता है उस समय हमारे अन्दर से वीणा के तार झंकृत होने लगते हैं और हमारे अन्दर एक निराला संगीत पैदा हो जाता है जिसे अनाहद कहा जाता है अनाहद का अर्थ है जो बिना बजाये बजे। जब हम जप और अजपा के पार चले जाते हैं तब अनाहद साकार होता है। दोनों होंठो से तो कोई भी आवाज निकाल सकता है परन्तु हमें वह स्थान खोजना चाहिए जहाँ बिना होंठो के भी आवाज होती है। दोनों हाथों से ताली तो बच्चा भी बजा सकता है परन्तु हमें साधना के माध्यम से वह स्थान खोजना होगा जहाँ एक हाथ से भी ताली बजती है। वह स्थान आत्मतीर्थ में है। वह अनाहत ध्वनि ही आत्मा की झंकार है संसारी शब्दों में उलझे रहने पर वह ध्वनि हमें सुनायी नहीं देती। जब हमारी सुरति शब्द में समा जाती है तब अनाहत ध्वनि भी बन्द हो जाती है ऐसी स्थिति से सुरति एवं शब्द को अलग करके नहीं देखा जा सकता है। ऐसी स्थिति का वर्णन कबीरदास जी करते हैं–

जाप मरे अजपा मरे अनहद भी मर जाय।
सुरत समानी शब्द में, सो कत हेरी जाय।।

वह शब्द हमारी श्वांसो में स्थित है अतः उसे श्वांसों के अन्दर ही अनुभव करना चाहिए।

भजन

सोहं शब्द विचारों साधो, सोहं शब्द विचारे रे।
माला कर से फिरत नहीं, जीभ न वर्ण उचारो रे।
अजपा जाप होवे घट माही, ताकी ओर निहारो रे।। (1)
हं अक्षर से श्वांस उठाओ, सो से जाय बिठाओ रे।
हंसो उल्टे होवे सोहं योगी जन निरधारो रे।। (2)
सब इक्कीस हजार मिलाकर छः सो होत सुमारो रे।
अष्ट पहर में सोवत जागत, मन में जपो सुखारो रे।।(3)
जो जन चिन्तन करत निरन्तर, छोड़ जगत व्यवहारों रे।
ब्रह्मानन्द परम पद पावे, मिटे जन्म संसारो रे।।(4)

योगी प्रकृति को किस प्रकार वश में करता है?

आज का मानव सांसारिक भाग दौड़ में इतना व्यस्त हो गया है कि वह अपने हित की बातों को समझने में भी असमर्थ रहता है क्योंकि इस जड़ प्रकृति के प्रभाव ने उसके जीवन में अनेक भ्रान्तियाँ पैदा कर दी हैं इस कारण से इन भ्रान्तियों ने उसके अन्दर अशान्ति पैदा कर दी है। सत्य ज्ञान भ्रान्तियों से फैली अशान्ति में पूर्ण शान्ति स्थापित कर देता है। यह सत्य ज्ञान मानव में एक नयी ऊर्जा पैदा कर देता है सत्य सभी में छिपा हुआ है और वह इन आँखों से दिखायी नहीं देता है। फिर भी उसका ज्ञान सम्भव है। यदि मानव को उसके जीवन में सत्य का मार्ग दर्शन कराने वाले तत्वदर्शी सन्त मिल जाये तो उसके जीवन में फैला अन्धकार दूर हो सकता है। अज्ञान अन्धकार होने के कारण ही मानव के मन में अशान्ति रहती है। सत्य ज्ञान हो जाने के बाद अर्थात् परमात्मा की कृपा से आत्म ज्ञान होने के पश्चात् जीवन का अन्धकार दूर हो जाता है तब जीवन में शान्ति का अनुभव होने लगता है। मानव के अन्तःकरण में दो प्रकार के जीवाणु निवास करते हैं एक शुभ और दूसरे अशुभ। जब मानव के अन्तःकरण में ज्ञान का उजाला हो जाता है तब अशुभ जीवाणु उस दिव्य प्रकाश में सुन्न पड़ जाते हैं और शुभ जीवाणुओं को उस प्रकाश से शान्ति मिलती है जिस प्रकार सूर्योदय होने पर निशाचर एवं उल्लू आदि प्राणी भयभीत होकर सुन्न होकर इधर–उधर छिप जाते हैं। उसी प्रकार से अन्तःकरण में ज्ञान का सूर्योदय होने पर अशुभ जीवाणु प्रभावहीन होने लगते हैं। वे अशुभ जीवाणु ज्ञान प्रकाश में अशान्त हो जाते हैं और शुभ जीवाणु प्रभावशाली और प्रकाश से शान्ति को प्राप्त होते हैं। ज्ञान का साधन जब साधक तन्मयता से करता है तो अन्तकरण अर्थात् मन बुद्धि चित्त अहंकार सभी में शान्ति स्थापित हो जाती है। पृथ्वी, जल, अग्नि वायु और आकाश आदि भौतिक तत्व भी आत्मज्ञानी के साधन में पूरा सहयोग करते हैं क्योंकि ये सभी भौतिक तत्व भी समदर्शी होते हैं। आत्म ज्ञानी साधक के अनुकूल सारी प्रकृति होने लगती है। साधक के साधना मार्ग में प्रकृति तत्व बाधक न बनकर उसके सहायक बन जाते हैं। प्रकृति जड़ एवं परिवर्तनशील है जबकि आत्मा–परमात्मा चैतन्य एवं अविनाशी है। चलायमान होने के कारण प्रकृति चक्र निरन्तर घूमता रहता है। हमारा श्वांस कभी दायां स्वर कभी बाँया स्वर तथा कभी सुष्मना स्वर में चलता है। श्वाँस की शक्ति से ही हम सुगन्ध–दुर्गन्ध का अनुभव करते हैं तथा हमारे श्वाँस के अन्दर ही एक शब्द है जो परमात्मा की आवाज़ है परमात्मा की आवाज़ ही शब्द ब्रह्म है। जब साधक अपनी सुरति को इस शब्द में जोड़कर स्थिर हो जाता है तब प्रकृति चक्र पूरी तरह से रूक जाता है। प्रकृति चक्र के रूक जाने पर साधक अपने यथार्थ स्वरूप में पहुँच जाता है। फिर वह साधक भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञाता हो जाता है।

अलौकिक अध्यात्मिक साधना शिविर एवं सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी दिल्ली–110085 संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर एवं सत्संग का आयोजन दिनाँक **06.12.2022** से **08.12.2022** तक "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली–85 में मुक्तात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के निष्कामी सेवक महात्मा निर्मलानन्द जी के सान्निध्य में हुआ। जिसमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से साधक एवं साधिकाएँ सम्मिलित हुए जिसमें महात्मा जी के तत्वाधान में साधना का अभ्यास किया गया। महात्मा जी ने सत्संग में प्रवचन करते हुए। शिविर में प्रतिदिन दो पारियों में साधना का अभ्यास कराया गया शिविर में सत्संग प्रवचन करते हुए महात्मा जी ने ज्ञान के महत्व को समझाते हुए प्रेमियों को बताया कि ज्ञान मानव जीवन का अनमोल खजाना है जिसके द्वारा साधक अव्यक्त ब्रह्म को अपने अन्दर व्यक्त कर लेता है यद्यपि ज्ञान का मार्ग कठिन है। परन्तु साधना के माध्यम से इसे सरल बनाया जा सकता है। जब साधक के मन में परमात्मा के प्रति अनन्य प्रेम तथा श्रद्धा एवं विश्वास पैदा हो जाता है तब साधक के अन्दर निराकार ब्रह्म साकार हो जाता है। ज्ञान के मार्ग पर चलने से साधक के अन्दर वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। ब्रह्म को अव्यक्त रूप में जान लेना ही ज्ञान है ज्ञान से साधक का अन्तकरण पवित्र होता है। ज्ञान की प्राप्ति गुरू के माध्यम से होती है। साधक एवं साधिकाओं ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सभी प्रेमियों ने सत्संग एवं गुरू भक्ति के भजनों का आनन्द लिया। दिनांक 09.12.22 को प्रातः साधना एवं प्रसाद वितरण के बाद शिविर का समापन हुआ।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका सभी प्रेमियों के जीवन को ज्ञान के रंग में रंगा देने वाली अद्भुत पत्रिका है ज्ञान का रंग जीवन में चढ़ जाने पर संसारी विषयों का रंग उतरने लगता है।

– हंस राज चोपड़ा

2: आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा प्रकाशित पत्रिक "अध्यात्म सन्देश" अध्यात्म जगत का दर्शन कराने वाली पत्रिका है। इसमें दिये गये महात्मा जी के प्रवचन आत्मिक उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाले हैं।

– राग भोग कानूनगो (मु॰ नगर)

3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका को आनन्दित करने वाली पत्रिका है यह अध्यात्म के प्रत्येक पहलू को उजागर कर जीवन को पूर्णतया पवित्र बना देती है।

– पंकज कुमार जेवर (गौतम बुद्ध नगर)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में प्रकाशित महात्मा जी के अद्गार योग साधन करने की लगन लगाने वाले होते हैं इन्हे पढ़कर योग साधन में मन अधिक लगता है।

– रामधारी सिंह अवन्तिका, दिल्ली–85

DL(N)/202/2022-24

आत्म ज्ञान प्रकाश मंडल संस्था द्वारा एक अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी दिल्ली संस्था द्वारा अलौकिक एवं मासिक सत्संग का आयोजन मुक्तात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के निष्कामी सेवक महात्मा निर्मलानन्द जी के सान्निध्य में **"चेतन योग मोक्ष धाम"** रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली–110085 में दिनांक 06.11.2022 को किया गया। सत्संग में अन्य प्रेमियों ने भी ज्ञान एवं भक्ति के विषय में अपने विचार व्यक्त किये भक्ति विषयक भजन भी सुनाये। आरती एवं प्रसाद वितरण के बाद सत्संग का समापन हुआ।

प्रकाशक एवं मुद्रक महात्मा निर्मलानन्द जी (संरक्षक), चेतन योग आश्रम, सी. एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली-85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी

मुद्रक : गैलेक्सी इन्टरप्राईसीस
ऑफिस नं॰ 3, ग्राउण्ड फ्लोर, प्लाट नं॰ 165, नियर चौपाल घर,
शिवा मार्किट, पीतम पुरा, दिल्ली–110034